

अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

शांतिदूत की बरसती कृपा में अभिस्नात हो रहा कोयम्बतूर का जन-जन

-कहीं अल्पप्रवास तो कहीं प्रवचन और कहीं प्रवास को पहुंचे महातपस्वी महाश्रमण

-जीवन में एकाग्रता की शक्ति का विकास करें विकास: आचार्यश्री महाश्रमण

**07.02.2019 कुप्पकोणम पुदुर, कोयम्बतूर (तमिलनाडु):** केरल और तमिलनाडु के सीमावर्ती क्षेत्र स्थित तमिलनाडु का मुख्य शहर कोयम्बतूर आध्यात्मिकता की ऐसी बयार बह रही है जो जन-जन के मानस को आनंद की अनुभूति करा रही है। दक्षिण भारत के मर्यादा महोत्सव के लिए कोयम्बतूर की धरती पर अपनी अहिंसा यात्रा के साथ पधारे जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी मर्यादा महोत्सव के लिए प्रवेश से पूर्व कोयम्बतूर के अनेक क्षेत्रों विहारण कर लोगों को अपने दर्शन और मंगल आशीष से लाभान्वित करने के साथ अपनी मंगलवाणी से उनके हृदय में मानवता के बीजों के वपन का भी कार्य कर रहे हैं। इस कारण कोयम्बतूर में की आबो-हवा ही मानों आध्यात्मिकतामय बन गई हो। चारों ओर अहिंसा यात्रा और उसके प्रणेता के विषय में लोगों की जिज्ञासा और उनके दर्शन करने की भावना दिखाई दे रही है।

गुरुवार को आचार्यश्री ने पीलेमेडु स्थित पी.एस.जी. सर्वजना हायर सेकेण्ड्री स्कूल से मंगल प्रस्थान किया। आचार्यश्री कोयम्बतूर नगर के अनेक मार्गों से विहार करते हुए सर्वप्रथम गोलछा परिवार के निवास स्थान उमंग में पधारे। स्वल्प प्रवास के उपरान्त आचार्यश्री मुख्य प्रवचन कार्यक्रम हेतु मंगल प्लाई एण्ड लेमिनेट्स परिसर में पधारे। यहां आयोजित प्रवचन कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी के जीवन में एकाग्रता की शक्ति होनी चाहिए। एकाग्रता मन से संबंधित है। आदमी का मन व्यग्र भी हो सकता है तो एकाग्र भी हो सकता है। आदमी का मन जब विभिन्न जगहों और विषयों पर घूमता है तो वह मन की व्यग्रता होती है और जब आदमी का मन किसी एक विषय वस्तु अथवा एक स्थान पर केन्द्रित हो जाता है तो वह मन की एकाग्रता होती है। आदमी का मन एक जगह टिकता है, वह मन की एकाग्रता होती है। आदमी को अपने मन को एकाग्र बनाने का प्रयास करना चाहिए।

एकाग्रता एक शक्ति है। आदमी इस शक्ति का कैसा उपयोग करता है, यह उसके विवेक पर निर्भर करता है। आदमी अपने मन को अच्छे कार्यों में एकाग्र करने का प्रयास करे। आदमी मंत्र जप, प्रभु की भक्ति अथवा किसी के कल्याण में अपने मन को एकाग्र करने का प्रयास करे, वह वांछनीय है। ध्यान आदि के प्रयोग और प्रयास से मन को एकाग्र किया जा सकता है। मंगल प्रवचन के पश्चात् आचार्यश्री प्रतिष्ठान के आर्चनर परिवार के सदस्यों को अहिंसा यात्रा के तीनों आयामों के विषय में अवगति प्रदान कर आचार्यश्री ने संकल्पत्रयी भी प्रदान की। अपने प्रतिष्ठान में आचार्यश्री के पदार्पण से हर्षित श्रीमती मीरा अग्रवाल ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी भावाभिव्यक्ति दी। वहीं आज के दिन व रात्रिकालीन प्रवास को लुणिया कुंज में पदार्पण को लेकर अत्यधिक हर्षित मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री विनोद लुणिया ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। सुश्री दीपशिखा लुणिया ने भी अपनी हर्षाभिव्यक्ति दी। लूणिया परिवार के बच्चों ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से अपने आराध्य की अभिवन्दना की। मंगल प्रवचन के पश्चात् आचार्यश्री दिन-रात्रि के प्रवास हेतु लगभग डेढ़ किलोमीटर का विहार कर लुणिया कुंज में पधारे।

---